सैद्धान्तिक विषय–edu 07

आरम्भिक स्तर पर भाषा एवं गणित के पठन–लेखन तथा संख्यापूर्व सम्बोधों/क्षमताओं का विकास

कक्षा षिक्षणः विषयवस्तु

- पठन एवं लेखन का अर्थ एवं महत्व।
- उद्देश्य।
- उपयोगिता।
- वर्ण, शब्द, वाक्य।
- ध्वनि का अध्ययन।
- स्वरों, व्यंजनों तथा व्यंजन समूहों को सुनकर समझना।
- दिये गये निर्देश, सन्देश, सुनाये गये वर्णन, कविता, कहानियों, लोकगीतों आदि में निहित भावों तथा विचारों को सुनकर समझना।
- हिन्दी/अंग्रेजी की सभी ध्वनियों, स्वरों, व्यंजनों का शुद्ध उच्चारण।
- लिपि की सभी ध्वनियों के लिपि संकेतों को पहचानकर शुद्ध रूप में पढ़ना।
- पूर्णविराम, अर्द्धविराम, प्रश्नवाचक तथा विस्मय सूचक चिह्नों को पहचानते हुए एवं विषयवस्तु को अर्थ ग्रहण करते हुए पढ़ना।
- विलोम, समानार्थी, तुकान्त, अतुकान्त तथा समान ध्वनियों वाले शब्दों को पहचानना एवं पढ़ना।
- लिपि संकेतों, स्वर, व्यंजन, मात्राएँ, संयुक्त वर्णों को सुडौल तथा आकर्षक रूप में लिखना।
- अनुनासिक ध्वनियों के लिपि संकेतों को शुद्धता के साथ लिखना।
- संख्यापूर्व तैयारी एवं सम्बोध।
- 1 से 9 तक की संख्याओं को वस्तुचित्रों की सहायता से गिनना, पढ़ना, लिखना।
- संख्याओं को क्रमबद्ध करना।
- गणितीय संक्रियायें–जोड़ना, घटाना एवं शून्य का ज्ञान।
- इकाई, दहाई तथा सैकड़े का ज्ञान।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को आरम्भिक स्तर पर भाषा एवं गणित के पठन–लेखन क्षमता का विकास के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- विभिन्न प्रकार के फन–गेम्स तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के शैक्षिक खेल तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के वर्ण/शब्द के खेल तैयार करना।
- गणित पर आधारित सरल खेल तैयार करना।
- विभिन्न खेलों पर नाटक तैयार करना।
- तेजी से पढ़ने/लिखने के लिए गतिविधियाँ तैयार करना।

शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन

उद्देश्य

- विद्यालय प्रबन्धन का अर्थ, आवष्यकता एवं महत्व की जानकारी देना।
- विद्यालय प्रबन्धन के सिद्धान्तों से परिचित कराना।
- विद्यालय प्रबंधन में विभिन्न अभिकर्मियों की भूमिका से अवगत कराना।
- विद्यालयीय व्यवस्था को प्रभावी बनाने का कौषल प्राप्त करने में सक्षम बनाना।
- विद्यालय प्रबन्धन के क्षेत्र जैसे–भौतिक, मानवीय, वित्तीय, शैक्षणिक, समय–सूचनाओं एवं अभिलेखों का प्रबन्धन आदि की जानकारी देना।
- विद्यालयीय क्रियाकलापों के सफलतापूर्वक सम्पादन में प्रशिक्षित करना।
- बेसिक शिक्षा अधिनियम 1972, बेसिक शिक्षा नियमावली एवं टी0ई0टी0 नियमावली की जानकारी देना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

सैद्धान्तिक विषय–edu 08

शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन

कक्षा षिक्षणः विषयवस्तु

(अ) शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन

- संस्थागत नियोजन एवं प्रबन्धन का अर्थ, आवष्यकता एवं महत्व।
- विद्यालय प्रबन्धन का अर्थ, आवष्यकता एवं महत्व।
- विद्यालय प्रबन्धन के क्षेत्र–
- भौतिक संसाधनों का प्रबन्धन (विद्यालय भवन, फर्नीचर, शैक्षिक उपकरण, साज–सज्जा, पेयजल, शौचालय)।
- मानवीय संसाधनों का प्रबंधन
    - षिक्षक
    - बच्चे
    - समुदाय (ग्राम षिक्षा समिति, विद्यालय प्रबंधन समिति, षिक्षक अभिभावक संघ, मातृषिक्षक संघ, महिला प्रेरक दल)
- वित्तीय प्रबन्धन (विद्यालय अनुदान, टी0एल0एम0 ग्रान्ट, विद्यालय को समुदाय से प्राप्त धन, विद्यालय की सम्पत्ति से अर्जित धन, ग्राम पंचायत निधि से/जनप्रतिनिधियों से प्राप्त अनुदान)।
- शैक्षिक प्रबन्धन (कक्षा–कक्ष प्रबन्धन, षिक्षण अधिगम सामग्री प्रबन्धन, लर्निंग कार्नर एवं पुस्तकालय प्रबन्धन, पाठ्यपुस्तकें, कार्यपुस्तिकाएं, षिक्षक संदर्षिकाएँ, शब्दकोष का प्रयोग एवं प्रबन्धन)।
- समय प्रबन्धन (समय सारिणी का निर्माण व प्रयोग)।
    - एक या दो अध्यापकों वाले विद्यालयों हेतु समय–सारिणी।
    - तीन या चार अध्यापकों वाले विद्यालयों हेतु समय–सारिणी।
    - पाँच अध्यापक वाले विद्यालय हेतु समय सारिणी।
- पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों का प्रबंधन– खेलकूद, शैक्षिक कार्यक्रम (वाद–विवाद, निबन्ध आदि), सांस्कृतिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय पर्व, शैक्षिक भ्रमण, बागवानी, सत्रांत समारोह) ।
- सूचनाओं एवं अभिलेखों का प्रबन्धन (विद्यालयीय सूचनाओं का संकलन, विष्लेषण एवं अभिलेखीकरण)।
- विद्यालय अभिलेख के प्रकार–

अध्यापक उपस्थिति पंजिका	छात्र उपस्थिति पंजिका	पत्र व्यवहार पंजिका	एस0एम0सी0 पंजिका	एस0एम0सी0 आय–व्यय पंजिका	ग्राम शिक्षा निधि (आय–व्यय) पंजिका
ग्राम शिक्षा समिति बैठक पंजिका	मातृ शिक्षक संघ पंजिका	अभिभावक शिक्षक संघ पंजिका	शिक्षण अधिगम सामग्री पंजिका	स्टॉक पंजिका, निःशुल्क पुस्तक वितरण पंजिका	निःशुल्क गणवेष वितरण पंजिका
बाल गणना/परिवार सर्वेक्षण पंजिका	बालकों के जन्मदिन की पंजिका	स्वास्थ्य परीक्षण पंजिका	छात्रवृत्ति वितरण पंजिका	अनुश्रवण/निरीक्षण पंजिका, शिक्षक डायरी, बुक–बैंक पंजिका	एम0डी0एम0 कनवर्जन कॉस्ट एवं खाद्य पंजिका
कोटेशन रख–रखाव पंजिका	टेण्डर प्रक्रिया सम्बन्धी पंजिका	आवागमन पंजिका	आदेश पंजिका	एम0डी0एम0 वितरण पंजिका	

- आपदा प्रबन्धन।

- प्रभावपूर्ण विद्यालय प्रबन्धन के सिद्धान्त– प्रजातान्त्रिक प्रबन्ध, आंकड़ों का वैज्ञानिक संग्रहण, लक्ष्य निर्धारण तथा योजना, आवधिक निरीक्षण, लचीलापन आदि
- विद्यालय प्रबन्धन में विभिन्न अभिकर्मियों की भूमिका–
  - प्रधानाध्यापक, षिक्षक एवं बच्चों (बाल सरकार) की भूमिका।
  - समुदाय, अभिभावक (ग्राम षिक्षा समिति, षिक्षक अभिभावक संघ, मातृषिक्षक संघ, मीना मंच) की भूमिका।
  - पर्यवेक्षण तंत्र की भूमिका–(ब्लॉक संसाधन केन्द्र के समन्वयक, न्याय पंचायत संसाधन केन्द्र के प्रभारी, खण्ड षिक्षा अधिकारी, डायट मेन्टर, जिला समन्वयक, जिला बेसिक षिक्षा अधिकारी एवं उच्च अधिकारियों की भूमिका)।

(ब). प्रारम्भिक षिक्षा के विकास में संलग्न विभिन्न अभिकरण एवं उनकी भूमिका

(I) राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाले अभिकरण

उदाहरण –

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिषद (NCERT)
- राष्ट्रीय अध्यापक षिक्षा परिषद (NCTE)
- राष्ट्रीय शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रषासन विश्वविद्यालय (NUEPA)
- इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विष्वविद्यालय (IGNOU)
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS)

(II) राज्य स्तर पर कार्य करने वाले अभिकरण

उदाहरण –

- राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
- राज्य हिन्दी संस्थान
- मनोविज्ञानशाला
- परीक्षा नियामक प्राधिकारी आदि

(III) जिला स्तर पर कार्य करने वाले अभिकरण

उदाहरण –

- जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान
- जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी आदि

(IV) स्थानीय स्तर पर कार्य करने वाले अभिकरण

उदाहरण –

- खण्ड शिक्षा अधिकारी
- एन0पी0आर0सी0

(स). प्राथमिक शिक्षा का आधारभूत ढाँचा

उदाहरण –

- बेसिक शिक्षा परिषद का गठन एवं कार्य
- बेसिक शिक्षा अधिनियम 1972
- बेसिक अध्यापक शिक्षा सेवा नियमावली
- टी0ई0टी0 नियमावली
- सूचना का अधिकार अधिनियम–2005 के सामान्य नियम व प्रावधान तथा विद्यालय स्तर पर दी जाने वाली सूचनाओं की जानकारी।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- प्रशिक्षुओं द्वारा प्राथमिक शिक्षा पर कार्य करने वाले विभिन्न अभिकरणों में से प्रत्येक स्तर पर कार्य करने वाले एक–एक अभिकरण पर अध्ययन कर विस्तृत आख्या या रिपोर्ट तैयार करना।
- विद्यालय प्रबन्धन के अंगों पर मॉडल तैयार करना।
- विद्यालय की विकास योजना तथा उसके शैक्षिक एवं वित्तीय उपाशय पर प्रोजेक्ट तैयार करना।
- कक्षा प्रबन्धन के अंगों एवं योजना पर मॉडल तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार की विद्यालयीय समितियाँ एवं उनके कार्यों व दायित्वों पर चार्ट/मॉडल तैयार करना।